साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 9, अंक : 43 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 12 जून 2024 से 18 जून 2024 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

2500 साल पहले विनाशकारी भूकंप ने बदल दिया था गंगा का मार्ग, क्या भविष्य में फिर घट सकती है ऐसी घटना

नई दिल्ली। आज से करीब 2500 साल पहले आए विनाशकारी भूकंप ने गंगा का प्रवाह मार्ग अचानक से बदल दिया था। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने आगाह किया है कि भविष्य में ऐसा भूकंप गंगा के मार्ग को फिर से बदल सकता है। गौरतलब है कि गंगा दुनिया की सबसे बड़ी नदियों में से एक है। जो पश्चिमी हिमालय से पूर्व की ओर यात्रा करते हुए ढाई हजार किलोमीटर से भी ज्यादा का सफर करती है और अंत में बंगाल की खाड़ी में समा जाती है। अपनी इस लम्बी यात्रा के दौरान यह ब्रह्मपुत्र, मेघना सहित अन्य प्रमुख नदियों के साथ मिलकर जलमार्गों की भूलभुलैया बनाती है।

अध्ययन में वैज्ञानिकों ने पुष्टि की है कि करीब ढाई हजार साल पहले आए इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर सात से आठ के बीच रही होगी। वैज्ञानिकों ने यह भी अंदेशा जताया है कि यदि भविष्य में ऐसी विनाशकारी घटना फिर घटती है, तो उससे करीब 14 करोड़ लोग प्रभावित हो सकते हैं। वैज्ञानिकों ने आशंका जताई है कि इस विनाशकारी भूकंप ने वर्तमान बांग्लादेश में नदी के मुख्य मार्ग को बदल दिया, जो आज भी बड़े भूकंपों के प्रति बेहद संवेदनशील क्षेत्र है। घनी आबादी वाला इस क्षेत्र में किसी भी बड़े भूकंप के विनाशकारी प्रभाव सामने आ सकते हैं। शोधकर्ताओं ने इस बात की भी पुष्टि की है कि नदी मार्ग में इतना बड़ा बदलाव पहले कभी नहीं देखा गया। इस बारे में अमेरिका के कोलंबिया क्लाइमेट स्कूल की लामोंट-डोहर्टी अर्थ आब्जर्वेटरी के भूविज्ञानी और अध्ययन से जुड़े शोधकर्ता माइकल स्टेकलर ने प्रेस विज्ञप्ति के हवाले से कहा कि, मुझे नहीं लगता कि हमने कहीं भी कभी इतना बड़ा भूकंप देखा है।

अंतराष्ट्रीय शोधकर्ताओं द्वारा किए इस अध्ययन के नतीजे 17 जून 2024 को अंतराष्ट्रीय जर्नल नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित हुए हैं। वैज्ञानिकों ने नदी मार्ग में होने वाले कई बदलावों को दर्ज किया है। बता दें कि इन बदलावों को उच्छेदन कहा जाता है। इनमें से कुछ बदलाव भूकंप के कारण भी होते हैं। प्रमुख डेल्टाओं से होकर बहने वाली अन्य नदियों की तरह ही गंगा भी अक्सर प्राकृतिक रूप से भूकंप के बिना भी अपना मार्ग बदलती रही है। ऊपर की ओर से बहकर आने वाली तलछट चैनल में जमा होती जाती है, जिससे यह हिस्सा आसपास के बाढ़ के मैदान से ऊपर उठ जाता है। यह तब तक बढ़ता है जब तक पानी इसे तोड़कर अपने लिए एक नया रास्ता नहीं बना लेता। हालांकि यह घटना एकाएक घटित नहीं होती। ऐसा होने में वर्षों या दशकों का समय लग सकता है। लेकिन स्टेकलर के मुताबिक भूकंप से ऐसा तुरंत हो सकता है। अध्ययन से जुड़ी प्रमुख शोधकर्ता और नीदरलैंड के वेगेनिंगन विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर एलिजाबेथ लिज चेम्बरलेन का इस बारे में कहना है कि, गंगा जैसी विशाल नदी के मामले में पहले इस बात की पुष्टि नहीं हुई थी कि भूकंप गंगा जैसी विशाल नदियों के डेल्टाओं में कटाव की वजह बन सकता है।

उपग्रह से प्राप्त चित्रों की मदद से शोधकर्ताओं ने ढाका से करीब 100 किलोमीटर दक्षिण में गंगा नदी की मुख्य धारा की पहचान की है। यह निचला इलाका करीब डेढ़ किलोमीटर चौड़ा है, और करीब 100 किलोमीटर तक मौजूदा नदी के समानांतर चलता है। कीचड़ से भरा यह क्षेत्र अकसर बाढ़ के पानी से भर जाता है। इसका मुख्य रूप से उपयोग स्थानीय लोगों द्वारा धान की कृषि के लिए किया जाता है।

क्यों आया था विनाशकारी भूकंप 2018 में इस क्षेत्र की खोज करते हुए चेम्बरलेन और अन्य शोधकर्ता ने पाया कि मिट्टी की क्षैतिज परतों को काटते हुए हल्के रंग की रेत की ऊर्ध्वाधर परते थी। यह विशेषता, जिसे सीस्माइट के रूप में जाना जाता है, भूकंप के कारण बनती है। उन्हें जो सीस्माइट मिले वे 30 से 40 सेंटीमीटर चौड़े थे और 3 से 4 मीटर मिट्टी को काटते थे। आगे की जांच से पता चला कि यह सीस्माइट व्यवस्थित रूप से संरेखित थे, जो दर्शाता है कि वे एक ही समय में बने थे। रेत और मिट्टी के रासायनिक विश्लेषण से पता चला है कि करीब ढाई हजार साल पहले इस क्षेत्र में सात से आठ तीव्रता का विनाशकारी भूकंप आया था, जिसकी वजह से यह बदलाव हुए थे। शोधकर्ताओं का अनुमान है कि इस भूकंप की दो संभावित वजहें हो सकती हैं, पहला दक्षिण और पूर्व में एक सबडक्शन जोन है, जहां महासागरीय क्रस्ट की एक विशाल प्लेट खुद को बांग्लादेश, म्यांमार और पूर्वोत्तर भारत के नीचे धकेल रही है। दूसरा उत्तर में हिमालय के तल पर मौजूद विशाल फाल्ट है, जो भारतीय उपमहाद्वीप के धीरे-धीरे एशिया से टकराने के कारण बढ़ रहा है।

2016 में स्टेकलर के नेतृत्व में किए एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि यह क्षेत्र काफी खतरनाक है जहां दबाव बढ़ रहा है और वहां फिर से विनाशकारी भूकंप आने की आशंका काफी प्रबल है। इस क्षेत्र में आखिरी बड़ा भूकंप 1762 में आया था, जिसकी वजह से एक घातक सुनामी पैदा हुई जो ढाका तक पहुंच गई थी। अनुमान है कि एक और भूकंप 1140 ईस्वी के आसपास आया होगा। 2016 में किए इस अध्ययन में यह भी अंदेशा जताया गया है कि यदि फिर से ऐसा कोई भूकंप आता है तो उससे 14 करोड़ लोग प्रभावित हो सकते हैं।

इजराइल-गाजा संघर्ष: आम जनता के साथ-साथ पर्यावरण को भी चुकानी पड़ रही भारी कीमत

इजराइल- कहते हैं जंग किसी के लिए फायदेमंद नहीं होती। इसमें शामिल सभी पक्षों को कहीं न कहीं इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। ऐसा ही कुछ इजराइल-गाजा संघर्ष के मामले में भी देखने को मिला। एक ऐसा संघर्ष जो मानव जाति के लिए किसी त्रासदी से कम नहीं। यह संघर्ष न केवल अब तक हजारों लोगों की जिंदगियों को निगल चुका है। साथ ही इसकी वजह से बुनियादी ढांचें और अर्थव्यवस्था को भी भारी क्षति हुई है। गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय ने सोमवार को जो जानकारी साझा की है, उसके मुताबिक पिछले आठ महीनों में यह संघर्ष गाजा में 37,347 जिंदगियों को लील चुका है। मीडिया में छपी खबरों के मुताबिक गाजा पट्टी पर अब तक 85,372 लोग घायल हो चुके हैं। इतना ही नहीं इस संघर्ष की वजह से अब तक लाखों लोगों को विस्थापन की पीड़ा झेलनी पड़ी है। इजराइल में भी अब तक करीब 1,600 जाने जा चुकी हैं। वहीं घायलों का आंकड़ा 14 हजार के करीब पहुंच चुका है। हालांकि मानवीय त्रासदी के बीच पर्यावरण और जलवायु को भी इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी है। इस बारे में जारी एक नई रिपोर्ट से पता चला है कि यह संघर्ष इंसानों के साथ-साथ पर्यावरण के लिए भी बड़ी त्रासदी साबित हुआ है, जिसकी वजह से कार्बन उत्सर्जन काफी बढ़ गया। इस रिपोर्ट में संघर्ष के पहले 120 दिनों के बारे में जो अनुमान जारी किए हैं उनके मुताबिक इन शुरूआती दिनों के दौरान संघर्ष की वजह से हुआ उत्सर्जन 26 देशों के वार्षिक उत्सर्जन से भी अधिक रहा। वहीं इजरायल और हमास ने इस दौरान युद्ध को लेकर जो निर्माण किए हैं यदि उनकों भी इसमें शामिल कर लिया जाए तो यह उत्सर्जन 36 देशों और क्षेत्रों के कुल उत्सर्जन से ज्यादा हो जाता है।

जीवाणुरोधी दवाओं की संख्या हुई 97, डब्ल्यूएचओ ने रिपोर्ट की जारी

नई दिल्ली। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने दुनिया भर में नैदानिक और पूर्व नैदानिक विकास में एंटीबायोटिक सहित जीवाणुरोधी एंटीबायोटिक पर अपनी नवीनतम रिपोर्ट जारी की। हालांकि नैदानिक जीवाणुरोधी एंटीबायोटिक की संख्या 2021 में 80 से बढ़कर 2023 में 97 हो गई है, लेकिन गंभीर संक्रमणों के लिए नए, एंटीबायोटिक की तत्काल जरूरत है। अत्यधिक उपयोग के कारण एंटीबायोटिक दवाओं का असर नहीं हो रहा है, उनकी जगह नई दवाओं को शामिल करना जरूरी है।

डब्ल्यूएचओ द्वारा इस तरह की रिपोर्ट पहली बार 2017 में जारी की गई थी, वार्षिक रिपोर्ट इस बात का मूल्यांकन करती है कि क्या वर्तमान अनुसंधान और विकास के दौर में मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए सबसे अधिक खतरा पैदा करने वाले दवा प्रतिरोधी बैक्टीरिया से होने वाले संक्रमणों का ठीक से उपचार करती है या नहीं।इसका उद्देश्य एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (एएमआर) के लगातार बढ़ते खतरे का बेहतर ढंग से मुकाबला करने के लिए जीवाणुरोधी अनुसंधान और विकास को आगे बढ़ाना है। एएमआर तब होता है जब बैक्टीरिया, वायरस, कवक और परजीवी पर दवाओं का असर नहीं होता है, जिससे लोग बीमार हो जाते हैं और संक्रमण फैलने का खतरा बढ़ जाता है जिसका इलाज करना मुश्किल होता है, बीमारी यहां तक की मृत्यु हो जाती है। एएमआर मुख्य रूप से रोगाणुरोधी दवाओं के दुरुपयोग और अति प्रयोग के कारण होता है, फिर भी, दुनिया भर में कई लोगों के पास आवश्यक रोगाणुरोधी दवाओं तक पहुंच नहीं है। रिपोर्ट के हवाले से डब्ल्यूएचओ के एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध के सहायक महानिदेशक डॉ. युकिको नाकातानी ने कहा, एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध बदतर होता जा रहा है, फिर भी हम सबसे खतरनाक और घातक बैक्टीरिया से निपटने के लिए जरूरी तेजी से नए अग्रणी उत्पाद विकसित नहीं कर रहे हैं।

नवाचार की बहुत कमी है, फिर भी जब नए उत्पादों को अधिकृत किया जाता है, तब भी पहुंच एक गंभीर चुनौती है। सभी आय स्तरों के देशों में जीवाणुरोधी

एंटीबायोटिक उन रोगियों तक नहीं पहुंच पा रहे हैं जिन्हें उनकी सख्त जरूरत है। न केवल विकास के दौर में बहुत कम जीवाणुरोधी हैं, यह देखते हुए कि शोध और विकास के लिए कितना समय चाहिए और वहां विफलता की आशंका बनी रहती है, बल्कि पर्याप्त नवाचार भी नहीं है। बीपीपीएल संक्रमणों से निपटने के लिए विकास के तहत 32 एंटीबायोटिक दवाओं में से केवल 12 को ही नया माना जा सकता है। इसके अलावा इन 12 में से केवल चार ही कम से कम एक डब्ल्यूएचओ भारी रोगज़नक़ के खिलाफ़ सक्रिय हैं - बड़े बीपीपीएल की शीर्ष जोखिम श्रेणी है, उच्च और मध्यम प्राथमिकता से ऊपर है। पुरी श्रेणी में कमी है, जिसमें बच्चों के लिए उत्पाद, बाहरी रोगियों के लिए अधिक सुविधाजनक खाई जाने वाली और बढ़ती दवा प्रतिरोध से निपटने के लिए एंटीबायोटिक शामिल हैं। जो पारंपरिक नहीं हैं उन जैविक एंटीबायोटिक, जैसे कि बैक्टीरियोफेज, एंटीबॉडी, एंटी-वायरलेंस एजेंट, प्रतिरक्षा-माड्यूलेटिंग एजेंट और माइक्रोबायोम-माड्यूलेटिंग एजेंट, एंटीबायोटिक दवाओं के विकल्प के रूप में तेजी से खोजे जा रहे हैं। हालांकि, गैर-पारंपरिक एंटीबायोटिक का अध्ययन और नियमन करना आसान नहीं है।इन उत्पादों के नैदानिक अध्ययन और मूल्यांकन को सुविधाजनक बनाने के लिए और प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि यह निर्धारित करने में मदद मिल सके कि इन एजेंटों का चिकित्सकीय रूप से कब और कैसे उपयोग किया जाए। एक जुलाई 2017 से नए स्वीकृत जीवाणुरोधी दवाओं को देखते हुए, 13 नए एंटीबायोटिक्स ने विपणन प्राधिकरण हासिल किया है, लेकिन केवल दो एक नए केमिकल वर्ग से संबंधित हैं और उन्हें अभिनव कहा जा सकता है, जो बैक्टीरिया के खिलाफ प्रभावी और मनुष्यों के लिए सुरक्षित नए जीवाणुरोधी दवाओं की खोज में वैज्ञानिक और तकनीकी चुनौती को उजागर करते हैं।

इसके अलावा तीन गैर-पारंपरिक एंटीबायोटिक को अधिकृत किया गया है, ये सभी वयस्कों में एंटीबायोटिक उपचार के बाद आवर्ती क्लॉस्ट्रिडियोइड्स डिफिसाइल संक्रमण (सीडीआई) को रोकने के लिए आंत माइक्रोबायोटा को बहाल करने के लिए मल-आधारित उत्पाद हैं।पिछले चार सालों में कई गैर-पारंपरिक नजरियों के साथ प्रीक्लिनिकल उत्पाद सक्रिय रहे हैं। इन उत्पादों का लक्ष्य ग्राम-नेगेटिव रोगजनकों पर रहता है, जो अंतिम उपाय यानी एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति प्रतिरोधी होते हैं। ग्राम-नेगेटिव बैक्टीरिया में उपचार का विरोध करने के नए तरीके खोजने की क्षमता शामिल होती है और वे आनुवंशिक सामग्री को आगे बढ़ा सकते हैं जो अन्य बैक्टीरिया को भी दवा प्रतिरोधी बनने में मदद करते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि एक ही रोगजनक को निशाना बनाने वाले जीवाणुरोधी एजेंटों की ओर बदलाव रुक गया है। एक ही रोगजनक को निशाना बनाने वाले एजेंट व्यापक रूप से उपलब्ध और किफायती, तेज निदान की जरूरत को बढ़ाते हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इलाज किए जाने वाले संक्रमणों में वह बैक्टीरिया मौजूद हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, अधिक पारदर्शिता और नए लेकिन चुनौतीपूर्ण परियोजनाओं के आसपास सहयोग की सुविधा होगी, वैज्ञानिकों और दवा बनाने वालों की मदद होगी और नए जीवाणुरोधी एंटीबायोटिक के लिए दवा विकास के लिए अधिक रुचि और धन उत्पन्न होगा। नए जीवाणुरोधी एंटीबायोटिक विकसित करने के प्रयासों के साथ-साथ यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाने की आवश्यकता है कि उन्हें समान रूप से सुलभ बनाया जा सके, खासकर कम और मध्यम आय वाले देशों में। संक्रमणों की रोकथाम, निदान और उपचार के लिए गुणवत्तापूर्ण और किफायती उपकरणों तक सबकी पहुंच, सार्वजनिक स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर एएमआर के प्रभाव को कम करने के लिए जरूरी है।

यह नौजवानों का देश है, युवा इस अवसर का लाभ उठायें -उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्टार्ट अप इंडिया, मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया मिशन के माध्यम से देश में औद्योगिक विकास को अभूतपूर्व गति प्राप्त हुई है। आर्थिक क्रांति के लिए आज देश पूरी तरह से तैयार है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल टीआईटी ग्रुप भोपाल के प्लेसमेंट डे-2024 कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने विभिन्न कंपनियों में चयनित छात्रों और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि अधोसंरचना विकास के साथ उद्योगों के लिए सकारात्मक वातावरण और देश की युवा जनसंख्या को मानव धन के रूप में विकसित करने के लिए उद्योग आधारित दक्षता के प्रयास किए जा रहे हैं। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे देश की 50 प्रतिशत से भी अधिक आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है। यह नौजवानों का देश है। हमारे देश का भविष्य बहुत सुनहरा है। युवा इस अवसर का लाभ उठायें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विभिन्न कंपनियों में चयनित छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि अपने कैरियर में ध्यान दें, मनोयोग से काम करें साथ ही देश, प्रदेश और समाज के प्रति ज़िम्मेदारी के प्रति भी सजग रहें। कार्यक्रम में टीआईटी ग्रुप चीफ पैट्रन श्री रामराज कसरोलिया, चेयरपर्सन टीआईटी ग्रुप श्रीमती साधना करसोलिया, वाईस चेयरपर्सन श्री सौरभ कसरोलिया सहित विभिन्न मल्टीनेशनल कंपनियों के प्रतिनिधि, शिक्षक और छात्र उपस्थित थे।

उत्तर के कई हिस्सों में दिन रात दोनों गर्म, जानें- कहां थम गया मॉनसून

मुंबई। उत्तर और पूर्वी भारत के अधिकतर हिस्सों में भीषण गर्मी का कहर जारी है, रातों का तापमान सामान्य से अधिक रहने से परेशानी दोगुनी हो गई है। वहीं देश के कुछ हिस्सों को गर्मी से राहत मिलने की संभावना है क्योंकि यहां अगले तीन से चार दिनों के दौरान दक्षिण-पश्चिम मॉनसून अपनी मौजूदगी दर्ज करा सकता है, इन हिस्सों में महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, ओडिशा, तटीय आंध्र प्रदेश और उत्तर-पश्चिमी बंगाल की खाड़ी के कुछ और इलाके शामिल हैं। मौसम विभाग की मानें तो दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के अगले चार दिनों के दौरान पश्चिम बंगाल में गंगा के मैदानी इलाकों के कुछ हिस्सों, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल के शेष हिस्सों, बिहार और झारखंड के कुछ हिस्सों में भी दस्तक देने की संभावना है।

मौसम विभाग के ताजा अपडेट के अनुसार, पूर्वोत्तर असम के निचले स्तरों मे एक चक्रवाती प्रसार बना हुआ है। बंगाल की खाड़ी से पूर्वोत्तर भारत तक तेज दक्षिण-पश्चिमी हवाएं चल रही हैं। एक और चक्रवाती प्रसार निचले और मध्य स्तरों पर सौराष्ट्र से सटे उत्तर-पूर्व अरब सागर पर जारी है और दूसरा निचले स्तरों पर तटीय आंध्र प्रदेश से सटे पश्चिम-मध्य बंगाल की खाड़ी पर स्थित है। उपरोक्त मौसम संबंधी गतिविधियों के चलते मौसम विभाग ने आज उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय के अलग-अलग हिस्सों में बहुत भारी से अत्यधिक भारी बारिश होने की आशंका जताई गई है, इन सभी राज्यों में 204.5 मिमी से भी अधिक बरस सकते हैं बादल। वहीं आज, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा के अलग-अलग हिस्सों में भारी से बहुत भारी बारिश होने के आसार हैं, यहां 115.6 मिमी से 204.4 मिमी तक बारिश होने का अनुमान लगाया गया है।

आज, कोंकण और गोवा, मध्य महाराष्ट्र, गुजरात, केरल और माहे, बिहार और ओडिशा के अलग-अलग हिस्सों में भारी बारिश होने का पूर्वानुमान है, इन सभी राज्यों में 64.5 मिमी से 115.5 मिमी तक हो सकती है बारिश।

वहीं उत्तर भारत में मौसम संबंधी बदलाव की बात करें तो, पश्चिमी विक्षोभ मध्य स्तरों पर पश्चिमी हवाओं में एक गर्त के रूप में जारी है। इसकी वजह से 19 से 22 जून के दौरान जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, गिलगित-बाल्टिस्तान और मुजफ्फराबाद, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में तूफानी हवाओं के साथ बिजली गिरने तथा हल्की बारिश होने की संभावना है। वहीं, 19 और 20 जून के दौरान पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में वज्रपात होने तथा तेज हवाओं के साथ हल्की बारिश होने का पूर्वानुमान है। मौसम विभाग की मानें तो अगले दो दिनों के दौरान उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों में 25 से 35 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज सतही हवाएं चलने के आसार जताए गए हैं।

कहां चलेगी लू या हीटवेव

मौसम विभाग के मुताबिक, आज उत्तर प्रदेश के कई हिस्सों में भीषण लू या हीटवेव चलने के आसार हैं। वहीं आज, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली और उत्तरी राजस्थान के अलग-अलग इलाकों में लू के प्रकोप की आशंका जताई गई है। आज, पश्चिम बंगाल में गंगा के तटीय इलाकों और ओडिशा में गर्म और उमस भरे मौसम बने रहने की आशंका जताई गई है। वहीं आज, उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में मौसम के अत्यधिक गर्म बने रहने के आसार हैं। आज, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली के कुछ हिस्सों, राजस्थान के कुछ इलाकों में में रात के मौसम के गर्म रहने की आशंका जताई गई है।

मछुआरों को समुद्र से दूर रहने की चेतावनी मौसम विभाग के मुताबिक आज, मन्नार की खाड़ी, श्रीलंका तट, पश्चिम-मध्य बंगाल की खाड़ी से सटे दक्षिण-पश्चिम में 35 से 45 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से से चलने वाली तूफानी हवाओं के और तेज होकर 55 किमी प्रति घंटे में तब्दील होने की आशंका जताई गई है। वहीं आज, सोमालिया तट, दक्षिण-पश्चिम और उससे सटे पश्चिम-मध्य अरब सागर के आसपास 45 से 55 किमी प्रति घंटे की गति से चलने वाली तेज तूफानी हवाओं के और तेज होकर 65 किमी प्रति घंटे तक पहुंचने के आसार हैं। उपरोक्त तूफानी हवाओं को देखते हुए मौसम विभाग ने मछुआरों को इन इलाकों में मछली पकड़ने तथा किसी तरह के व्यापार से संबंधित काम के लिए न जाने की चेतावनी जारी की है।

वर्षा ऋतु से पहले आधिकारिक वृक्षारोपण का लिया संकल्प

इंदौर। वीआइपी परस्पर की स्लाइस 4 महिलाओं ने एकत्रित होकर निर्जला एकादशी के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया एवं इसी अवसर पर इंदौर शहर में अधिक से अधिक पौधे लगाने के संकल्प को दोहराते हुए वृक्षारोपण किया। ज्ञात हो कि इंदौर प्रशासन के द्वारा वर्षा ऋतु से पूर्व 51 लाख पौधे लगाने का संकल्प लिया है। खगोलीय स्थिति के अनुसार वृष राशि से सूर्य का मिथुन राशि में प्रवेश होने पर विआईपी परसपर की सभी महिलाओं ने आदित्य हृदय स्त्रोत का पाठ किया। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती दिव्या दुबे के गृह निवास पर किया गया। इसके अतिरिक्त इनके द्वारा पूर्व में जागरूकता कार्यक्रम, सफाई कार्यक्रम एवं अलग-अलग त्योहार पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने स्वल्पाहार एवं ग्रीष्म ऋतु में ठंडक देने वाले आमलकी, खस शरबत का आनंद लिया। कार्यक्रम में अनेक प्रकार के खेलों का भी आनंद लिया गया। उक्त कार्यक्रम की जानकारी देते हुए श्रीमती शालिनी भार्गव ने बताया कि खेलों का आनंद लेना, इस प्रकार के कार्यक्रम से आपस में संवाद बढ़ता है, कार्यक्रम में परंपरागत त्यौहार मनाने से आने वाली पीढियां को उनकी जानकारी मिलती है, एवं एकत्रीकरण से अनेक प्रकार की समस्याओं पर विचार विमर्श होता है।

जलवायु परिवर्तन के दौर में सरकार का एजेंडा

हमें एक नए भारत के लिए संचालन संस्थानों को भी मजबूत करने की आवश्यकता है। बीते कुछ वर्षों के दौरान अधिकांश पारंपरिक संस्थानों का क्षरण हुआ है। देश में एक बार फिर पांच साल के लिए नई सरकार का गठन हो गया है। मेरी नजर में इस सरकार का एजेंडा वही पुराना है लेकिन इसमें एक बुनियादी अंतर है। यह एजेंडा देश के विकास और जलवायु परिवर्तन) के दौर को देखते हुए होना चाहिए। एक तथ्य यह भी है कि प्राथमिकता वाले कदमों के क्षेत्रों की सूची भी समान है। ऊर्जा से लेकर पानी और सफाई से लेकर खाद्य और पोषण तक लगभग हर क्षेत्र में हमारे काम अधूरे हैं। स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में भी यही स्थिति है। हमें पता है कि पिछली सरकार के पास योजनाएं थीं और उसने इन तमाम मुद्दों के लिए बजट भी आवंटित किया था। हम यह भी जानते हैं कि जन कल्याण का काम एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इन चुनावों के दौरान जब संवाददाता मतदाताओं के विचार जानने निकले तो हमें सुनने को मिला कि बेरोजगारी एक अहम चिंता थी।

हमें एक नए भारत के लिए संचालन संस्थानों को भी मजबूत करने की आवश्यकता है। बीते कुछ वर्षों के दौरान अधिकांश पारंपरिक संस्थानों का क्षरण हुआ है। देश में एक बार फिर पांच साल के लिए नई सरकार का गठन हो गया है। मेरी नजर में इस सरकार का एजेंडा वही पुराना है लेकिन इसमें एक बुनियादी अंतर है। यह एजेंडा देश के विकास और जलवायु परिवर्तन) के दौर को देखते हुए होना चाहिए। एक तथ्य यह भी है कि प्राथमिकता वाले कदमों के क्षेत्रों की सूची भी समान है। ऊर्जा से लेकर पानी और सफाई से लेकर खाद्य और पोषण तक लगभग हर क्षेत्र में हमारे काम अधूरे हैं। स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में भी यही स्थिति है। हमें पता है कि पिछली सरकार के पास योजनाएं थीं और उसने इन तमाम मुद्दों के लिए बजट भी आवंटित किया था। हम यह भी जानते हैं कि जन कल्याण का काम एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इन चुनावों के दौरान जब संवाददाता मतदाताओं के विचार जानने निकले तो हमें सुनने को मिला कि बेरोजगारी एक अहम चिंता थी।

स्वच्छ पेयजल की कमी और सफाई का अभाव भी एजेंडे में प्रमुख था। ऊर्जा संकट भी एक मुद्दा था क्योंकि घरेलू गैस सिलिंडर की कीमत जेबों पर भारी पड़ रही थी और बिजली की उपलब्धता के बारे में ठीक-ठीक कुछ नहीं कहा जा सकता था। किसान अभी भी संकट में हैं। यानी अभी काफी काम करना बाकी है और यह उन क्षेत्रों में है जिनके बारे में पिछली सरकार ने कहा कि वह इन पर काम कर रही है। इसमें चकित होने वाली कोई बात नहीं। भारत एक बहुत बड़ा देश है और यहां शासन के मोर्चे पर तमाम कमियां हैं। किसी भी सरकारी योजना का अंतिम लक्ष्य यही है कि वह हर बार लोगों तक पहुंचे। अब जलवायु परिवर्तन का असर भी इसमें जुड़ गया है क्योंकि लगभग रोज देश का कोई न कोई हिस्सा मौसम की अतिरंजित घटना से दो-चार होता है। इसका विकास कार्यक्रमों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। बेमौसम बारिश और मौसम की अन्य अतिरंजित घटनाओं के कारण बाढ़, सूखा, आजीविका का नुकसान हुआ है और सरकारी संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव जैसे असर हुए हैं। यही वजह है कि भविष्य के एजेंडे में इस बात को स्वीकार किया जाना चाहिए कि विकास का संबंध पैमाने, गति और परिकल्पना से है। हमें विकास संबंधी योजनाओं के डिजाइन में और अधिक कल्पनाशीलता दिखाने की आवश्यकता है। लंबे समय तक सरकारें कल्याणकारी रुख तथा पूंजीवादी न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप के रुख के बीच उलझी रहीं। मेरी दृष्टि में जलवायु जोखिम के इस दौर में नए कथानक की आवश्यकता है। सरकार को विकास को लेकर नए सिरे से काम करने की जरूरत है ताकि वह समावेशी हो, सबके लिए लाभदायक और टिकाऊ हो। यानी हमें हर चीज को देखने को लेकर अपनी कल्पनाशीलता में बदलाव करना होगा। इसमें स्वच्छ जल की आपूर्ति से लेकर ऊर्जा तक शामिल है जिसका स्वच्छ लेकिन कम लागत वाला होना भी जरूरी है। इसके लिए डिजाइन और आपूर्ति में बदलाव लाना होगा। हमें धरती के लिए नई तरह का विकास प्रतिमान चाहिए जो सबके लिए कारगर हो।

ध्यान देने वाली बात है कि अधिकांश मामलों में सरकार के पास योजनाएं और बजट है। हमें यह सीखने की जरूरत है कि क्या कारगर है और क्या नहीं। हमें ऐसे कदमों की जरूरत है जो बड़े बदलाव लाएं। इसके लिए क्रियान्वयन करना होगा और जैसा कि मैंने कहा इस दिशा में पूरे जुनून के साथ काम करना होगा। यह सब तभी संभव होगा जब हम अगली पीढ़ी के दो सुधारों को अंजाम देना होगा। मेरी नजर में यह सरकार के लिए सबसे अहम एजेंडा होना चाहिए। पहला, हमें जमीनी संस्थानों को मजबूती देनी होगी जहां स्थानीय लोग हिस्सेदार हों। हमें भागीदारी वाले लोकतंत्र की आवश्यकता है ताकि विकास कार्यक्रम सफल हो सकें।

सेमी-कंडक्टर और चिप-डिजाइन क्षेत्र में विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और निवेशकों के लिए प्रगति के नए द्वार खुलेंगे - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

देवी अहिल्या इन्दौर और ताइवान के विश्वविद्यालयों के बीच हुआ एमओयू

मुख्यमंत्री ने किया टिकाऊ भविष्य के लिए पर्यावरण प्रबंधन विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

मुख्यमंत्री देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर की संगोष्ठी में वर्चुअली शामिल हुए

तथा भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा का अनावरण भी किया गया।

इंदौर (नगर प्रतिनिधि) मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विश्व में सेमी-कंडक्टर और चिप-डिजाइन क्षेत्र के सिरमौर ताइवान के साथ देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर द्वारा शैक्षणिक और अनुसंधान संबंधी गतिविधियों के लिए किए जा रहे एमओयू से मध्यप्रदेश के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और निवेशकों के लिए प्रगति के नए द्वार खुलेंगे। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने ताइवान के छह अलग-अलग विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू किया है। राज्य सरकार की हरसंभव कोशिश होगी कि ताइवान के साथ प्रदेश के संबंध प्रगाढ़ हों और शासन स्तर पर एमओयू क्रियान्वयन में कोई कठिनाई नहीं आए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर द्वारा टिकाऊ भविष्य के लिए पर्यावरण प्रबंधन विषय पर इंदौर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के शुभारंभ कार्यक्रम को समत्व भवन भोपाल से वर्चुअली संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री की वर्चुअल उपस्थिति में इन्दौर में आई-शु यूनिवर्सिटी ताइवान तथा देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए साथ ही विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानंद

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि टिकाऊ भविष्य के लिए पर्यावरण प्रबंधन विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन वर्तमान परिदृश्य में बहुत महत्वपूर्ण है। हमारी संस्कृति पर्यावरण के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए हमें प्रेरित करती है, हमारे वेद यह शिक्षा देते हैं कि जैसे हम स्वयं की चिंता करते हैं वैसे ही ब्रह्मांड की चिंता करें। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर नवाचार करने में अग्रणी रहा है इस उद्यमशीलता के लिए विश्वविद्यालय बधाई का पात्र है। पर्यावरण की दृष्टि से मध्य प्रदेश पर्याप्त संपन्न है। विश्व के सम्मुख मौजूद पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए केंद्र के साथ-साथ राज्य सरकार भी हर स्तर पर प्रयास कर रही है। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण और जन-जन में पर्यावरण की प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के अनेक बिंदु समाहित हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के क्रम में राज्य सरकार ने साढ़े 5 करोड़ पौधे लगाने का प्रण किया है। इस अभियान में इंदौर में भी 51 लाख पौधे लगाए जाएंगे। प्रदेश में जल स्रोतों के संरक्षण के लिए एक पखवाड़े तक चलाया गया अभियान पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा और प्रदेशवासियों की सक्रिय सहभागिता सराहनीय रही।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर(म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008